

IV. मौद्रिक और चलनिधि संबंधी स्थितियां

सुविचारित मौद्रिक निकासी को दर्शाते हुए, प्रणाली के तहत अधिशेष चलनिधि सीमा की मात्रा धीरे-धीरे कम होने लगी। तथापि, जून 2010 में 3-जी तथा बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम संबंधी नीलामियों के तहत काफी अधिक राशि जुटाए के कारण रिजर्व बैंक के पास सरकार का अधिशेष बढ़ जाने से चलनिधि की स्थिति में काफी तंगी आ गई। रिजर्व बैंक ने कारगर तरीके से चलनिधि की स्थिति का प्रबंधन किया, जिससे ब्याज दर की समग्र मीयाद संरचना में उसका असर फैलने को टालने में मदद मिली। 2010-11 की पहली तिमाही में निजी क्षेत्र को कर्ज की वृद्धि में और उछाल आया जो सुदृढ़ रिकवरी तथा 3जी और बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम के लिए किए गए भुगतान को दर्शाता है। तथापि जमाराशियों की वृद्धि में आई कमी के कारण स्थूल मुद्रा की वृद्धि में कमी आई।

IV.1 रिजर्व बैंक वैश्विक संकट की अनुक्रिया में इसके द्वारा अपनाए गए निभावकारी मौद्रिक नीति संबंधी रुख से सुविचारित निकासी की प्रक्रिया के माध्यम से 2009-10 की चौथी तिमाही से मौद्रिक नीति संबंधी लिखतों अर्थात् नीतिगत दरों तथा नकदी आरक्षित अनुपात में सामान्यीकरण ला रहा है। फरवरी 2010 से सीआरआर में वृद्धि किए जाने के कारण प्रणाली में अतिरिक्त चलनिधि कम करने में मदद मिली। जनता के पास मुद्रा में वृद्धि तथा सरकारी नकदी शेष बढ़ने के कारण मई 2010 के अंत तक चलनिधि की सुखद स्थिति काफी तेजी से घाटे में बदल गई।

IV.2 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के खाद्येतर कर्ज की वृद्धि में तेजी आई तथा 2010-11 की पहली तिमाही तक वह 2010-11 के मौद्रिक नीति संबंधी वक्तव्य में निर्धारित किए गए अनुसार वर्ष के 20.0 प्रतिशत के सांकेतिक वृद्धि पथ से आगे निकल गया। सुदृढ़ आर्थिक कार्यकलाप के अलावा, 3जी और ब्रॉडबैंड वायरलेस ऐक्सेस के लिए दूरसंचार कंपनियों द्वारा भुगतान के

सारणी IV.1: मौद्रिक संकेतक					
(राशि करोड़ रुपए में)					
मद	2 जुलाई 2010 को बकाया	घट-बढ़ (साल-दर-साल)			
		2009-10		2010-11	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
I. आरक्षित मुद्रा* (सीआरआर में परिवर्तन हेतु समायोजित आरक्षित मुद्रा)	11,73,831	-6,963	-0.7 (15.9)	2,28,880	24.2 (18.5)
II. व्यापक मुद्रा (एम ₃)	57,82,141	8,56,523	20.6	7,69,448	15.3
III. अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल जमाराशियां	46,32,703	7,26,938	22.0	6,01,737	14.9
IV. अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के खाद्येतर कर्ज	33,47,939	3,83,015	16.3	6,10,046	22.3

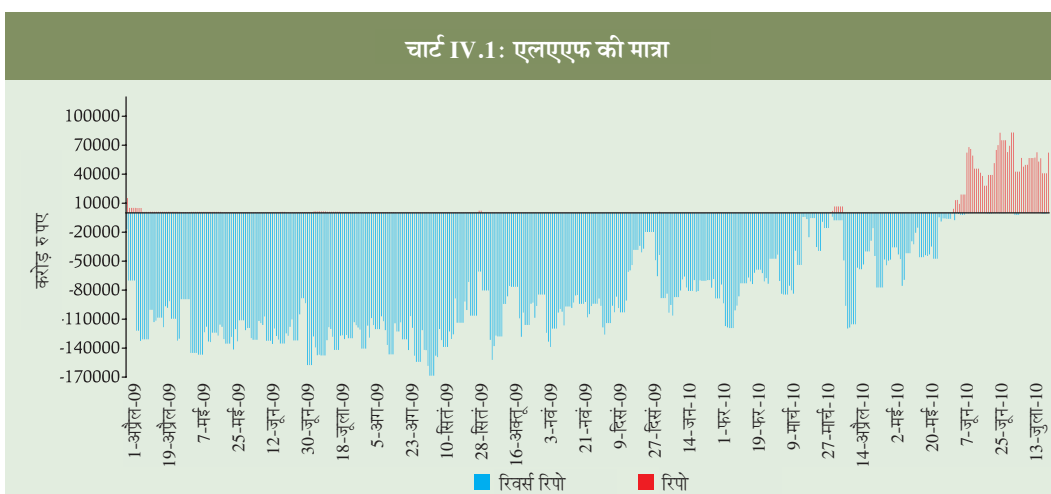
*: आंकड़े 16 जुलाई 2010 के हैं।
टिप्पणी: आंकड़े अनंतिम हैं।

लिए जुटाए गए कर्ज ने तिमाही के दौरान देखी गई कर्ज वृद्धि की ऊंची दरों में अंशदान किया। तथापि मुद्रा आपूर्ति (एम₃) संबंधी वृद्धि अप्रैल 2010 में निर्धारित 17.0 प्रतिशत के संकेतात्मक पथ के नीचे थी। यह मंदी मोटे तौर पर बैंकों के पास रखी कुल जमाराशि की वृद्धि दर में आयी कमी का परिणाम थी (सारणी IV.1)।

चलनिधि प्रबंधन

IV.3 2010-11 की पहली तिमाही में चलनिधि की स्थितियों में उल्लेखनीय बदलाव आया। फरवरी 2010 से प्रणाली में अधिशेष चलनिधि की मात्रा क्रमिक रूप से

कम होने के रिजर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति का सुविचारित सामान्यीकरण प्रदर्शित होता है। तदनुसार, चलनिधि समायोजन सुविधा अवशोषण की स्थिति में बनी रही, हालांकि रिवर्स रिपो की मात्रा में क्रमिक रूप से गिरावट आई (चार्ट IV.1)। मई 2010 के अंत से, चलनिधि में आकस्मिक और तेज सख्ती आई, जो एलएएसके बदलकर अंतर्वेशन की स्थिति में चले जाने को दर्शाता है। रिजर्व बैंक के पास सरकार के नकदी शेष में बहुत अधिक वृद्धि से चलनिधि की स्थिति में तंगी आई, जो अग्रिम कर संबंधी भुगतान की पहली किस्त के अलावा 3जी/बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम नीलामियों से प्राप्त राशि को दर्शाता है।



IV.4 चलनिधि की स्थितियों में विकास के विशिष्ट पहलुओं के अनुसार, अधिक सरकारी खर्च के कारण वित्त वर्ष 2010-11 के आरंभ में प्रणाली में अधिशेष चलनिधि की मात्रा शुरु आती तौर पर बढ़ गई। एलएएफ के तहत औसत दैनिक अवशोषण मार्च 2010 के 37,640 करोड़ रुपए से बढ़कर अप्रैल 2010 में 57,150 करोड़ रुपए हो गया। अर्थव्यवस्था में दृढ़तापूर्वक रिकवरी आने के साथ, रिजर्व बैंक ने सुविचारित तरीके से अपने नीतिगत लिखतों में सामान्यीकरण की दिशा में शुरुआत की। मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने तथा मुद्रास्फीतिकारी दबाव और अधिक बढ़ने से रोकने के लिए, रिजर्व बैंक ने 2010-11 की वार्षिक मौद्रिक नीति में रिपो तथा रिवर्स रिपो दरों में और सीआरआर में 25 आधार अंकों की बढ़ोतरी अप्रैल 2010 में कर दी (सारणी IV.2)। उसके बाद देशी बाजार में अधिशेष चलनिधि क्रमिक रूप से घट गई। रिजर्व बैंक ने सरकार के अस्थायी नकदी प्रवाह संबंधी बेमेल स्थिति को पूरा करने के लिए मई 2010 में नकद प्रबंधन बिलों (जिनकी अवधि जून 2010 के मध्य में पूरी हो गई थी) की नीलामी की। तथापि 3जी/बीडब्ल्यूए स्प्रेक्ट्रम नीलामियों के तहत आशा से अधिक राशि जुटाने के कारण रिजर्व बैंक के पास सरकारी शेष में तीव्र वृद्धि होने की वजह से 31 मई 2010 से चलनिधि की स्थिति अंतर्वेशन में बदल गई।

IV.5 चलनिधि की स्थिति में अस्थायी तंगी की प्रत्याशा में, रिजर्व बैंक ने निवल मांग और मीयादी देयताओं के 0.5 प्रतिशत तक एलएएफ के तहत अतिरिक्त चलनिधि समर्थन प्राप्त करने तथा 28 मई - 2 जुलाई 2010 की अवधि के लिए दैनिक आधार पर दूसरा एलएएफ भी प्राप्त करने की अनुमति अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को देने संबंधी उपाय शुरु किए। जून 2010 में एलएएफ के तहत औसत दैनिक अंतर्वेशन मई 2010 में लगभग 33,000 करोड़ रुपए के औसत दैनिक अवशोषण के

सारणी IV.2 : भारत में प्रमुख नीति दरों में परिवर्तन

(प्रतिशत)			
निम्नलिखित से प्रभावी	रिवर्स रेपो दर	रेपो दर	आरक्षित नकदी निधि अनुपात
1	2	3	4
26 अप्रैल 2008	6.00	7.75	7.75 (+0.25)
10 मई 2008	6.00	7.75	8.00 (+0.25)
24 मई 2008	6.00	7.75	8.25 (+0.25)
12 जून 2008	6.00	8.00 (+0.25)	8.25
25 जून 2008	6.00	8.50 (+0.50)	8.25
5 जुलाई 2008	6.00	8.50	8.50 (+0.25)
19 जुलाई 2008	6.00	8.50	8.75 (+0.25)
30 जुलाई 2008	6.00	9.00 (+0.50)	8.75
30 अगस्त 2008	6.00	9.00	9.00 (+0.25)
11 अक्टूबर 2008	6.00	9.00	6.50 (-2.50)
20 अक्टूबर 2008	6.00	8.00 (-1.00)	6.50
25 अक्टूबर 2008	6.00	8.00	6.00 (-0.50)
3 नवंबर 2008	6.00	7.50 (-0.50)	6.00
8 नवंबर 2008	6.00	7.50	5.50 (-0.50)
8 दिसंबर 2008	5.00 (-1.00)	6.50 (-1.00)	5.50
5 जनवरी 2009	4.00 (-1.00)	5.50 (-1.00)	5.50
17 जनवरी 2009	4.00	5.50	5.00 (-0.50)
4 मार्च 2009	3.50 (-0.50)	5.00 (-0.50)	5.00
21 अप्रैल 2009	3.25 (-0.25)	4.75 (-0.25)	5.00
13 फरवरी 2010	3.25	4.75	5.50 (+0.50)
27 फरवरी 2010	3.25	4.75	5.75 (+0.25)
19 मार्च 2010	3.50 (+0.25)	5.00(+0.25)	5.75
20 अप्रैल 2010	3.75 (+0.25)	5.25 (+0.25)	5.75
24 अप्रैल 2010	3.75	5.25	6.00 (+0.25)
2 जुलाई 2010	4.0 (+0.25)	5.50 (+0.25)	6.00

टिप्पणी : 1. रिवर्स रिपो चलनिधि अवशोषण को और रिपो चलनिधि अंतर्वेशन को दर्शाता है।
2. कोष्ठकों के आंकड़े नीतिगत दरों में परिवर्तन दर्शाते हैं।

विरुद्ध 47,000 करोड़ रुपए था। फलस्वरूप, मांग दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप, प्रतिफल वर्ष की अल्पावधि में काफी तंगी आई। तथापि मांग दर रिपो दर द्वारा निर्धारित एलएएफ कारिडोर की उच्चतम सीमा के आसपास बनी रही।

IV.6 कुल मिलाकर, जनता के पास मुद्रा में वृद्धि तथा रिजर्व बैंक के पास केंद्र का अधिशेष दोनों प्रणाली से चलनिधि का निकाला जाना दर्शाते हैं तथा 2010-11 की पहली तिमाही में ये स्वचालित चलनिधि के प्रमुख वाहक थे (सारणी IV.3)। सीआरआर में वृद्धि के कारण, स्वचालित

सारणी IV.3: रिज़र्व बैंक के चलनिधि प्रबंधन परिचालन

मद	2009-10					2010-11
	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	
	2	3	4	5	6	
क. चलनिधि के वाहक (1+2+3+4)	-45,110	-44,514	-66,785	55,055	-1,05,206	
1. प्राधिकृत व्यापारियों से भा.रि.बैंक का निवल क्रय	-15,874	2,523	436	910	816	
2. जनता के पास मुद्रा	-18,690	-9,020	-43,224	-31,650	-58,385	
3. क. रिज़र्व बैंक में केंद्र का अधिशेष	3,382	-67,938	-22,663	85,257	-58,249	
3. ख. अर्थोपाय अग्रिम और ओवरड्राफ्ट	0	0	0	0	0	
4. अन्य (अवशिष्ट)	-13,928	29,921	-1,334	538	10,612	
ख. चलनिधि प्रबंधन (4+5+6+7)	-21,674	62,376	89,870	1,618	67,255	
4. एलएएफ का चलनिधि प्रभाव	-1,30,020	25,390	86,330	18,795	75,785	
5. ओएमओ का चलनिधि प्रभाव*(निवल)	43,159	32,869	3,540	2,787	1,550	
6. एमएसएस का चलनिधि प्रभाव	65,187	4,117	0	16,036	2,420	
7. सीआरआर में परिवर्तन के पहले दौर का प्रभाव	0	0	0	-36,000	-12,500	
ग. बैंक का रिज़र्व # (क+ख)	-66,784	17,863	23,085	56,673	-37,951	

(+): बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि का अंतर्वेशन सूचित करता है। (-): बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि का अवशोषण सूचित करता है।
* : तेल बांड शामिल हैं, लेकिन राज्य सरकारों की ओर से खरीदी गयी प्रतिभूतियाँ शामिल नहीं हैं।
: बैंकों की वॉल्ट नकदी शामिल है एवं सीआरआर में परिवर्तन के कारण पहले दौर का चलनिधि प्रभाव समायोजित।
टिप्पणी: ति.4 के आंकड़े 31 मार्च के हैं और अन्य सभी तिमाहियों के आंकड़े अंतिम शुक्रवार के हैं।

प्रभाव के ऊपर चलनिधि का अतिरिक्त आहरण किया गया। प्राथमिक तौर पर चलनिधि की स्थिति का प्रबंधन रिपो परिचालनों के माध्यम से चलनिधि का अंतर्वेशन करके एलएएफ के जरिए किया गया (सारणी IV.4)।

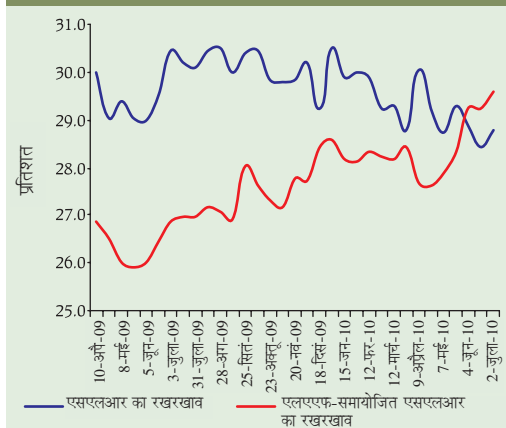
IV.7 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का अतिरिक्त एसएलआर निवेश एक साल पहले के 2,85,491 करोड़ रुपए की तुलना में 2 जुलाई 2010 को 1,87,705 करोड़ रुपए रह गया। एलएएफ के रिपो मोड को देखते हुए बकाया आधार पर एलएएफ की संपार्श्विक प्रतिभूतियों के लिए समायोजन करने पर, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का एसएलआर का रखरखाव एनडीटीएल का 29.6 प्रतिशत था, जो निर्धारित एसएलआर से 4.6 प्रतिशत अंक अधिक था (चार्ट IV.2)। बैंकिंग प्रणाली ने रिपो के माध्यम से रिज़र्व बैंक से चलनिधि प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त एसएलआर प्रतिभूतियों के एक हिस्से का उपयोग किया, तथा अधिक मात्रा में अतिरिक्त एसएलआर प्रतिभूतियां उपलब्ध होने से ब्याज दर की मीयाद संरचना में चलनिधि की तंग अस्थायी स्थितियों के फैलाव को रोकने में मदद मिलनी चाहिए। जून 2010

सारणी IV.4: चलनिधि की स्थिति

सारणी IV.4: चलनिधि की स्थिति			
(करोड़ रुपए)			
अंतिम शुक्रवार को बकाया	एलएएफ	एमएसएस	केंद्र का अधिशेष@
1	2	3	4
2009			
अप्रैल	1,08,430	70,216	-40,412
मई	1,10,685	39,890	-6,114
जून	1,31,505	22,890	12,837
जुलाई	1,39,690	21,063	26,440
अगस्त	1,53,795	18,773	45,127
सितंबर	1,06,115	18,773	80,775
अक्टूबर	84,450	18,773	69,391
नवंबर	94,070	18,773	58,460
दिसंबर	19,785	18,773	1,03,438
2010			
जनवरी	88,290	7,737	54,111
फरवरी	47,430	7,737	33,834
मार्च*	990	2,737	18,182
अप्रैल	35,720	2,737	-28,868
मई	6,215	317	-7,531
जून	-74,795	317	76,431

@ : अधिशेष के मामले में रिज़र्व बैंक में स्थित न्यूनतम नकदी शेष को छोड़कर।
* : आंकड़े 31 मार्च से संबंधित हैं।
टिप्पणी : 1. स्तंभ 2 में ऋणात्मक चिह्न एलएएफ के माध्यम से चलनिधि अंतर्वेशन दर्शाता है।
2. दूसरा एलएएफ 8 मई 2009 से रिपोर्ट करने के लिए नियत शुक्रवार को ही संचालित किया गया। 28 मई 2010 से दूसरा एलएएफ दैनिक आधार पर संचालित किया जा रहा है।

चार्ट IV.2: बैंकों द्वारा एसएलआर का रखरखाव



में संचालित ऋण के पुनः क्रय तथा जून एवं जुलाई 2010 में खजाना बिल नीलामियों को रद्द किए जाने से भी चलनिधि के दबाव को कम करने में एक सीमा तक मदद मिली।

IV.8 2 जुलाई 2010 को, यह देखते हुए कि वार्षिक मौद्रिक नीति में उल्लिखित वृद्धि संबंधी पूर्वानुमानों में ऊर्ध्वमुखी उछाल आया, मुद्रास्फीति के संबंध में हुई गतिविधियों के कारण रिपो तथा रिवर्स रिपो की दरें 25 आधार अंक और बढ़ाकर क्रमशः 5.5 प्रतिशत तथा 4.0 प्रतिशत कर दी गई। इससे पहले तदर्थ आधार पर शुरू किए गए चलनिधि प्रबंधन संबंधी उपायों को भी 16 जुलाई 2010 तक जारी रखा गया। यह स्पष्ट किया गया कि चलनिधि संबंधी दबाव में कमी लाने के लिए जो अस्थायी उपाय किए गए वे समग्र रूप से सुविचारित मौद्रिक निकासी के अनुरूप थे, जिसका उद्देश्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना तथा वृद्धि को नुकसान पहुंचाए बिना मुद्रास्फीति संबंधी प्रत्याशाओं पर लगाम लगाना था। चलनिधि की समग्र प्रचलित स्थितियों का आकलन करने पर तथा चलनिधि प्रबंधन में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों और प्राथमिक व्यापारियों को लचीलापन प्रदान करने की दृष्टि से, रिजर्व बैंक के दैनिक आधार पर दूसरा एलएएफ 30 जुलाई 2010 तक जारी रखा। चलनिधि की कमी

संबंधी स्थिति जुलाई 2010 में अब तक जारी रही तथा महीने के पहले तीन सप्ताहों के दौरान औसत दैनिक चलनिधि अंतर्वेशन 53,000 करोड़ रुपए के आसपास था।

आरक्षित मुद्रा

IV.9 वर्ष के दौरान सीआरआर में 75 आधार अंकों की संचयी वृद्धि होने के कारण, 2009-10 में प्राथमिक तौर पर आरक्षित मुद्रा के घटक पक्ष में रिजर्व बैंक के पास बैंकों की जमा राशियों में वृद्धि होने की वजह से आरक्षित मुद्रा की वृद्धि दर तेज हो गई। स्रोत पक्ष में, केंद्र के रिजर्व बैंक को ऋण में हुई वृद्धि एक प्रमुख कारक था, जो 2009-10 के लिए बड़े सरकारी उधार कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न करना सुकर बनाने के लिए रिजर्व बैंक के चलनिधि प्रबंधन परिचालन (अर्थात् एमएसएस को अनवाइंड और डिसिक्वेस्टर करना, खुले बाजार की खरीद तथा एलएएफ परिचालन) को तथा साथ ही उत्पादक कार्यकलापों के पर्याप्त वित्तपोषण को सुनिश्चित करने एवं मुद्रास्फीतिकारी दबावों को नियंत्रित करने को दर्शाता है।

IV.10 2010-11 की पहली तिमाही में, संचलन में मौजूद मुद्रा आरक्षित मुद्रा में वृद्धि का मुख्य घटक था (सारणी IV.5)। मुद्रा में उच्चतर वृद्धि का कारण आर्थिक कार्यकलापों में सुदृढ़ उछाल की वजह से मांग में हुई वृद्धि तथा मुद्रास्फीति में हुई वृद्धि था। संसाधन पक्ष में, आरक्षित मुद्रा में हुई वृद्धि केंद्र को रिजर्व बैंक के ऋण में हुई वृद्धि, जो प्राथमिक तौर पर बाजार¹ में रिपो परिचालन तथा एमएसएस के तहत शेष राशियों की अनवाइंडिंग

¹ रिजर्व बैंक द्वारा एलएएफ परिचालनों, खुला बाजार परिचालन, एमएसएस शेष तथा रिजर्व बैंक के पास रखे गए सरकार के नकद अधिशेष के रूप में केंद्र को कर्ज दिया जाता है। रिपो/खुला बाजार परिचालन संबंधी खरीद में वृद्धि तथा रिवर्स रिपो/एमएसएस शेष/रिजर्व बैंक के पास सरकार के अधिशेष में आई गिरावट से केंद्र को रिजर्व बैंक के निवल कर्ज में वृद्धि होती है तथा विपरीत स्थिति में इसके विपरीत होता है।

सारणी IV.5 : आरक्षित मुद्रा - घटबढ़

(करोड़ रुपए)

मद	2009-10				2010-11
	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1
1	2	3	4	5	6
आरक्षित मुद्रा	-38,926	16,216	51,816	1,38,583	15,685
घटक (1+2+3)					
1. संचलन में मुद्रा	29,692	1,081	45,442	32,181	64,785
2. भा.रि.बैंक के पास बैंकों की जमाराशियां	-72,664	20,680	5,456	1,07,552	-49,042
3. भा.रि.बैंक के पास 'अन्य' जमाराशियां	4,046	-5,545	918	-1,150	-59
स्रोत (1+2+3+4-5)					
1. भा.रि.बैंक द्वारा सरकार को दिए गए निवल कर्ज	-11,145	-14,953	51,428	1,24,676	15,796
जिसमें से : केंद्र को	-11,497	-14,968	51,597	1,24,688	15,807
2. भा.रि.बैंक द्वारा बैंकों और वाणिज्यिक क्षेत्र को दिए गए कर्ज	-9,623	-3,747	-5,926	-2,384	851
3. रिजर्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	-16,750	50,120	-15,108	-66,428	14,613
4. जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	254	302	309	351	238
5. भा.रि.बैंक की निवल मुद्रा देयताएं	1,662	15,506	-21,113	-82,369	15,814
ज्ञापन					
एलएएफ - रिपो (+) /रिर्स रिपो (-)	-1,32,800	28,170	67,765	37,360	39,375
खुले बाजार की निवल बिक्री *	-42,001	-31,591	-1,894	17	-8
केंद्र का अधिशेष	-13,156	77,713	17,519	-80,112	37,405
एमएसएस शेष	-65,187	-4,117	0	-16,036	-2,420

*: खजाना बिलों को छोड़कर

टिप्पणी : 1. ज्ञापन मदों का जोड़ हो सकता है कि केंद्र को रिजर्व बैंक के निवल कर्ज के बराबर नहीं हो क्योंकि एलएएफ और ओएमओ लेनदेन अंकित मूल्य पर तथा साथ ही एलएएफ परिचालनों के लिए मार्जिन संबंधी समयोजन के कारण हैं।

2. चौथी तिमाही के आंकड़े 31 मार्च के हैं और अन्य सभी तिमाहियों के आंकड़े रिपोर्ट करने के लिए नियत अंतिम शुक्रवार के हैं।
3. आंकड़े अर्न्ततम हैं।
4. केंद्र के अधिशेष में सरकार का निवेश शेष तथा रिजर्व बैंक के पास नकदी शेष शामिल हैं।

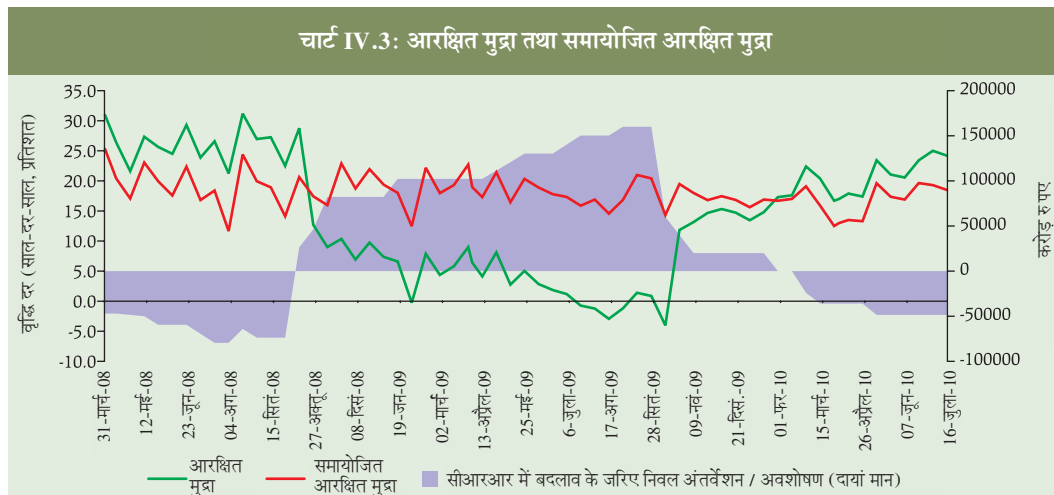
के कारण थी। यह आंशिक रूप से रिजर्व बैंक के पास रखी गई सरकार की नकद शेषराशियों में वृद्धि द्वारा प्रतिबलित हो गया। तिमाही के दौरान रिजर्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां भी बढ़ गईं।

IV.11 रिजर्व बैंक के पास बैंकों द्वारा रखी गई जमाराशियां घटक पक्ष में आरक्षित मुद्रा का मुख्य निर्धारक होती हैं, तथा इनमें रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाई के एक अंग के रूप में सीआरआर में किए गए घटबढ़ के फलस्वरूप बदलाव आता है, अतः सीआरआर में किए जानेवाले परिवर्तनों के लिए समायोजित करते हुए आधार मुद्रा के रुख का विश्लेषण करना उपयोगी होगा। समायोजित आरक्षित मुद्रा 16 जुलाई 2010 को 18.5 प्रतिशत (साल-दर-साल) बढ़ गई, जो संचलन

में मौजूद मुद्रा में (घटक पक्ष में) तथा सरकार को रिजर्व बैंक के कर्ज (स्रोत पक्ष में) हुई वृद्धि के प्रभाव को दर्शाता है (चार्ट IV.3)।

मुद्रा आपूर्ति

IV.12 एम₃ की वृद्धि में गिरावट जून 2010 के मध्य तक जारी रही (चार्ट IV.4क)। इसका कारण इसके प्रमुख घटक अर्थात् सकल जमाराशियों में हुई गिरावट था (सारणी IV.6 तथा चार्ट IV.4ख)। आवधिक जमाराशियों की वृद्धि में हुई कमी विशेष रूप से तीव्र थी, जो ऊंची मुद्रास्फीति को देखते हुए आंशिक रूप से कम जमा दरों का परिणाम थी। 2 जुलाई 2010 को समाप्त पखवाड़े में, सकल जमाराशियों में लगभग



1,15,000 करोड़ रुपए की पाक्षिक वृद्धि हुई; यह संभव है कि कर्ज के उठाव में हुई वृद्धि जमा राशियों की वृद्धि में परिलक्षित होनी शुरू हो गई हो। अगस्त 2009 से अल्प बचत योजनाओं में आवक बढ़ गया है क्योंकि बैंकिंग के पास रखी गई आवधिक जमा राशियों की तुलना

में अल्पबचतों में निवेश पर मिलनेवाला प्रतिलाभ 2009-10 की शुरुआत से अधिक रहा है (चार्ट IV.5)। तथापि अल्पबचतों में कुल वृद्धिशील अंतर्वाह आवधिक जमा राशियों में वृद्धि में आई मंदी के बावजूद आवधिक जमा राशियों की मासिक वृद्धि का एक छोटा-सा अंश है।

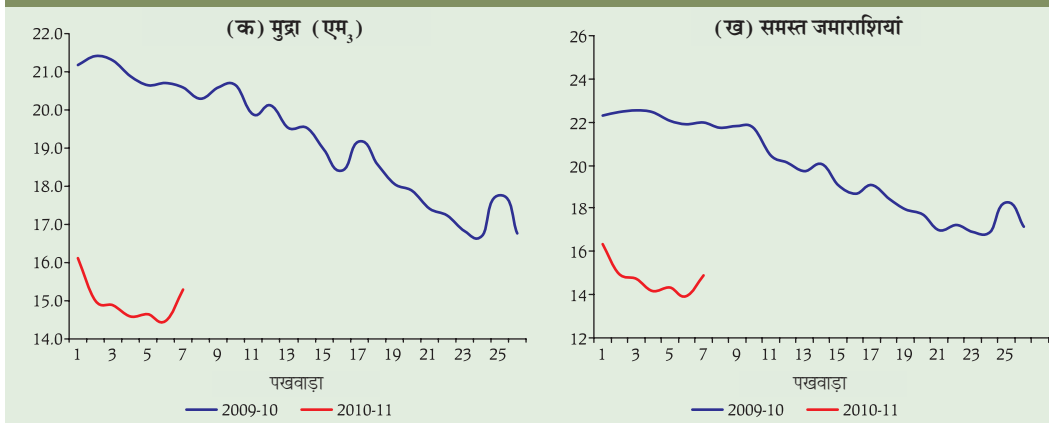
सारणी IV.6: मौद्रिक समुच्चय - घटबढ़

(करोड़ रुपए)

मद	2009-10				2010-11
	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1
1	2	3	4	5	6
एम्₃ (1+2+3 = 4+5+6+7-8)	1.63,787	1,61,970	1,24,777	3,54,416	77,314
घटक					
1 जनता के पास मुद्रा	24,913	2,797	45,086	29,787	64,381
2 बैंकों में सकल जमा राशियां	1,34,829	1,64,717	78,773	3,25,778	12,992
2.1 बैंकों में मांग जमा राशियां	-40,911	66,320	-26,343	1,34,985	-88,146
2.2 बैंकों में मीयादी जमा राशियां	1,75,739	98,397	1,05,116	1,90,793	1,01,138
3 आरबीआइ के पास 'अन्य' जमा राशियां	4,046	-5,545	918	-1,150	-59
स्रोत					
4 सरकार को बैंक का निवल कर्ज	1,20,816	71,703	35,598	1,61,646	41,051
4.1 सरकार को भा.रि.बैंक का निवल कर्ज	-11,145	-14,953	51,428	1,24,676	15,796
4.2 सरकार को अन्य बैंकों का कर्ज	1,31,961	86,656	-15,830	36,970	25,255
5 वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक कर्ज	-7,232	1,07,136	68,093	3,09,890	65,642
6 बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	-37,923	47,908	-20,701	-59,998	14,613
7 जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	254	302	309	351	238
8 बैंकिंग क्षेत्र की निवल मुद्रा देयताएं	-87,872	65,079	-41,478	57,472	44,231

टिप्पणी: आंकड़े अंतिम हैं।

चार्ट IV.4: मौद्रिक संकेतक (प्रतिशत में साल-दर-साल वृद्धि)

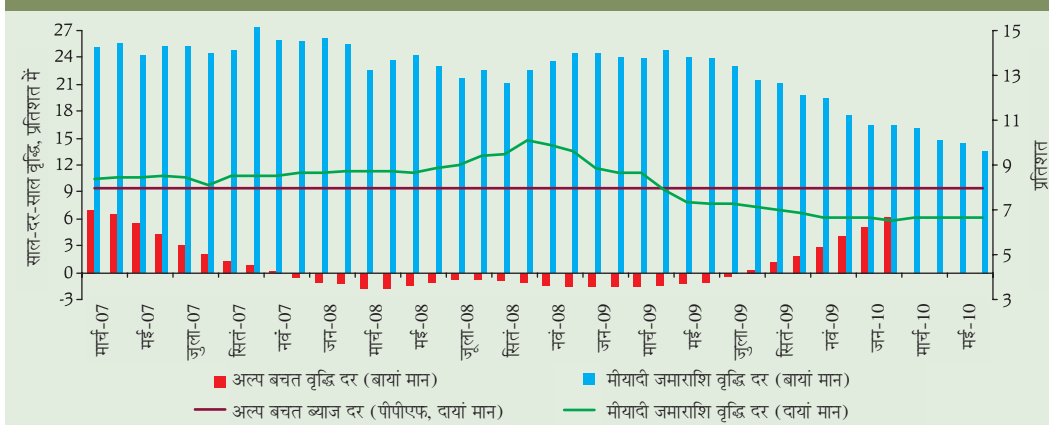


IV.13 जहां तक एम₃ के स्रोतों का संबंध है, तिमाही के दौरान मुख्य रूप से वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंकिंग प्रणाली के कर्ज से मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि हुई। 2009-10 की अंतिम तिमाही से अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा दिए गए खाद्येतर ऋण की वृद्धि में तेजी बनी हुई है (चार्ट IV.6क)। दूरसंचार परिचालकों ने 3जी/बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम के लिए भुगतान करने हेतु कर्ज जुटाया, जिसने कर्ज में हुई तेज वृद्धि में आंशिक अंशदान किया। जमा संग्रहण में शिथिलता आने से (2 जुलाई 2010 को

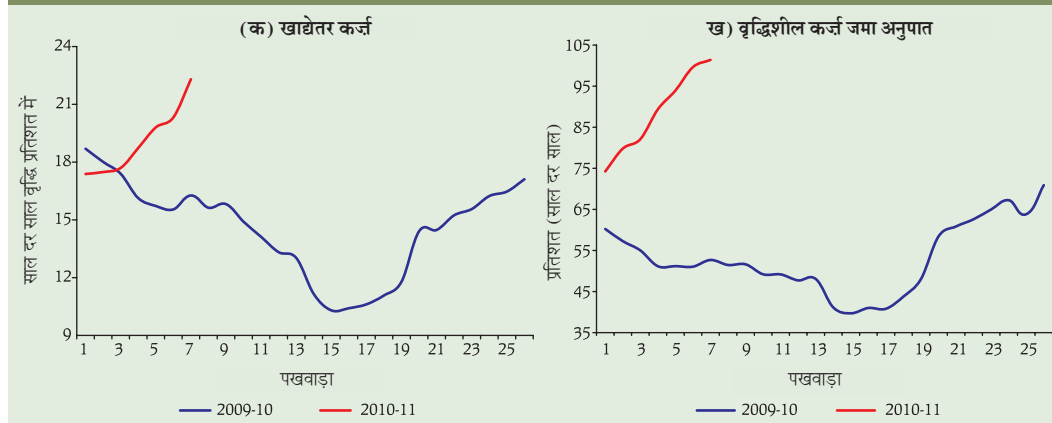
समाप्त पखवाड़े को छोड़कर) अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का वृद्धिशील खाद्येतर कर्ज जमा अनुपात बढ़कर 100 प्रतिशत से अधिक हो गया (चार्ट IV.6ख)। हालांकि बकाया आधार पर जमाराशियों के प्रति खाद्येतर कर्ज का अनुपात 2 जुलाई 2010 को 72.3 प्रतिशत था।

IV.14 जमाराशियों में गिरावट तथा खाद्येतर कर्ज की वृद्धि में तेजी आने के साथ, नवंबर 2009 से सरकारी प्रतिभूतियों में बैंकों के निवेश में कमी हुई है, यह एक ऐसा समय था जब खाद्येतर कर्ज की वृद्धि में टर्नअराउंड आया (चार्ट IV.7)।

चार्ट IV.5: मीयादी जमाराशियां तथा अल्प बचत राशियां

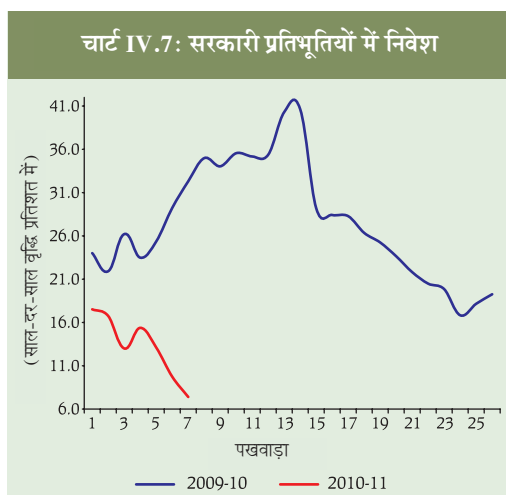


चार्ट IV.6: कर्ज के संकेतक



IV.15 कर्ज की मांग का पुनर्जीवित होना सभी बैंक समूहों के उधार संबंधी आंकड़ों में दिखाई दिया तथा विशेष रूप से विदेशी बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों ने पिछले साल की तुलना में साल-दर-साल अपने कर्ज की वृद्धि में उल्लेखनीय सुधार दर्शाया (सारणी IV.7)। सरकारी क्षेत्र के बैंकों से कर्ज की वृद्धि अधिकतम बनी रही तथा उसमें सर्वाधिक स्थिरता भी रही।

IV.16 बैंकों के सकल कर्ज के क्षेत्रवार विनियोजन के अलग-अलग आंकड़े उद्योग को दिए जानेवाले कर्ज



की वृद्धि में सुधार (साल-दर-साल) दर्शाते हैं, हालांकि इस प्रवाह का आधार अभी भी व्यापक नहीं है (सारणी IV.8)। उद्योग ने मई 2010 में पिछले साल के तदनु रूप महीने के 47.4 प्रतिशत की तुलना में वृद्धिशील खाद्येतर कर्ज के 57.9 प्रतिशत का अवशोषण किया। इस वृद्धि की अगुवाई बुनियादी ढांचा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, कागज और कागज उत्पाद, पेट्रोलियम, कोयला उत्पाद और न्यूक्लेयर ईंधन, रसायन और रसायन उत्पाद, वाहन, वाहन के पुर्जे तथा परिवहन उपकरणों ने की। तथापि सूक्ष्म और छोटे उद्यमों (उद्योग तथा सेवा) को वृद्धिशील खाद्येतर कर्ज का हिस्सा मई 2009 के 16.0 प्रतिशत की तुलना में घटकर मई 2010 में 11.9 प्रतिशत रह गया। सेवा क्षेत्र के भीतर भूसंपदा क्षेत्र को दिए जानेवाले कर्ज में तीव्र गिरावट आई जो सितंबर 2009 में 'भूसंपदा क्षेत्र को उधार' की संकल्पना में किए गए परिभाषात्मक बदलाव को दर्शाता है।

IV.17 2010-11 की पहली तिमाही में वाणिज्यिक क्षेत्र को किए गए कुल वित्तपोषण का लगभग 65 प्रतिशत बैंकिंग प्रणाली से आया, हालांकि पिछले साल की तदनु रूप अवधि की तुलना में बैंकेतर स्रोतों से होनेवाले प्रवाह में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बैंक कर्ज के अलावा,

सारणी IV.7: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा प्रदत्त ऋण

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	2 जुलाई 2010 को बकाया	घट-बढ़ (साल-दर-साल)			
		3 जुलाई 2009 को		2 जुलाई 2010 को	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	25,26,007	3,71,522	22.0	4,62,443	22.4
2. विदेशी बैंक	1,79,111	-12,257	-7.2	20,307	12.8
3. निजी बैंक	6,17,033	18,716	3.8	1,10,019	21.7
4. सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक *	34,02,390	3,89,967	16.2	6,06,823	21.7

*: क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक सहित।

टिप्पणी: आंकड़े अनंतिम हैं।

वाणिज्यिक क्षेत्र को दिए जानेवाले वित्त को अन्य महत्वपूर्ण स्रोत थे - आइपीओ जारी करना, आवास वित्त कंपनियों से कर्ज, बाह्य वाणिज्यिक उधार तथा एडीआर/जीडीआर (सारणी IV.9)।

सारणी IV.8: प्रमुख क्षेत्रों द्वारा प्रदत्त सकल बैंक ऋण

(राशि करोड़ रुपए में)

क्षेत्र	21 मई 2010 को बकाया	घटबढ़ (साल-दर-साल)			
		22 मई 2009		21 मई 2010	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
खाद्येतर सकल बैंक कर्ज (1 से 4)	30,21,481	3,83,512	17.6	4,63,235	18.1
1. कृषि और संबंधित कार्यकलाप	3,99,494	65,345	24.7	69,362	21.0
2. उद्योग	13,08,721	1,81,932	21.2	2,68,274	25.8
3. वैयक्तिक ऋण	5,89,003	24,489	4.6	36,032	6.5
आवास	3,05,325	15,095	5.7	26,870	9.6
सावधि जमा राशियों पर अग्रिम	47,032	3,718	8.8	1,093	2.4
क्रेडिट कार्ड बकाया राशि	19,579	382	1.4	-7,398	-27.4
शिक्षा	36,961	7,342	34.4	8,267	28.8
उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	8,138	-1,651	-17.1	140	1.8
4. सेवाएं	7,24,263	1,11,746	21.4	89,568	14.1
परिवहन परिचालक	52,170	8,721	24.7	8,202	18.7
प्रोफेशनल सेवाएं	49,549	9,537	29.9	8,070	19.5
व्यापार	1,60,985	19,852	16.2	18,695	13.1
स्थायर संपदाओं के लिए कर्ज	95,659	33,499	54.9	1,115	1.2
गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां	1,11,037	22,529	31.3	16,534	17.5
ज्यापन :					
प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	10,65,619	1,46,173	19.1	1,52,429	16.7
लघु उद्यम	3,72,867	61,551	24.0	55,129	17.4
उद्योग	13,08,721	1,81,932	21.2	2,68,274	25.8
खाद्य प्रसंस्करण	67,938	2,903	5.7	14,543	27.2
वस्त्रोद्योग	1,20,643	7,790	8.3	18,937	18.6
कागज एवं कागज के उत्पाद	19,536	1,936	14.0	3,774	23.9
पेट्रोलियम, कोयला उत्पाद एवं नाभिकीय ईंधन	63,080	3,552	7.5	12,240	24.1
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद	79,864	5,250	8.0	9,216	13.0
रबर, प्लास्टिक एवं उनके उत्पाद	16,570	2,284	20.6	3,169	23.7
लोहा तथा इस्पात	1,29,169	23,522	29.8	26,814	26.2
अन्य धातु तथा धातु के उत्पाद	35,470	5,406	21.5	4,951	16.2
इंजीनियरिंग	73,821	12,709	24.2	8,561	13.1
वाहन, वाहन के पुर्जें तथा परिवहन उपस्कर	37,544	2,958	9.9	4,570	13.9
रत्न तथा आभूषण	31,651	3,016	12.1	3,809	13.7
निर्माण	43,876	11,671	44.7	6,123	16.2
बुनियादी ढांचा	3,96,544	71,384	35.1	1,21,829	44.3

टिप्पणी: 1. आंकड़े अनंतिम हैं और चुनिंदा बैंकों से संबंधित हैं।

2. स्थावर संपदा के लिए कर्ज में आई कमी मोटे तौर पर सितंबर 2009 में स्थावर संपदा क्षेत्र को उधार देने की संकल्पना में किए गए परिभाषात्मक परिवर्तन को दर्शाती है।

सारणी IV.9: वाणिज्य क्षेत्रों की ओर वित्तीय संसाधनों का प्रवाह

(करोड़ रुपए)

मद	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-जून	
	2008-09	2009-10	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5
अ. समायोजित खाद्येतर बैंक कर्ज	4,21,091	4,80,258	2,529	1,62,373
i) खाद्येतर कर्ज	4,11,824	4,66,960	8,555	1,51,640 \$
जिसमें से : पेट्रोलियम और उर्वरक कर्ज	31,159	8,491	-18,796	-8,274 #
ii) एससीबी द्वारा गैर-एसएलआर निवेश	9,267	13,298	-6,026	10,733 \$
आ. गैर बैंक स्रोतों से प्रवाह (आ.1+आ.2)	4,61,702	5,97,263	58,946	87,837
आ.1 देशी स्रोत	2,79,908	3,81,431	38,659	54,091
1. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक निर्गम	14,205	31,956	236	5,187
2. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सकल निजी स्थानन	77,856	1,41,964	एनए	एनए
3. बैंक से इतर संस्थाओं द्वारा अभिदान किए गए वाणिज्य पत्रों का निवल निर्गम	4,936	25,835	27,134	29,178 *
4. आवास वित्त कंपनियों द्वारा निवल कर्ज	25,876	24,226	-892	4,028 #
5. आरबीआइ विनियमित 4 अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं- नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एक्विजि बैंक द्वारा प्रदत्त सकल निभाव का जोड़	31,408	33,871	-4,339	-3,097 #
6. प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशियां न लेने वाली एनबीएफसी (बैंक कर्ज घटाकर)	42,277	60,663	8,004	14,859 #
7. एलआइसी का कारपोरेट ऋण, बुनियादी ढांचा तथा सामाजिक क्षेत्र में सकल निवेश	83,350	62,916	8,517	3,936 #
आ.2 विदेशी स्रोत	1,81,794	2,15,832	20,287	33,746
1. बाह्य वाणिज्यिक उधार / एफसीसीबी	31,350	14,356	-1,805	9,091
2. एडीआर / जेडीआर निर्गम, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के निर्गमों को छोड़कर	4,788	15,124	215	4,832
3. विदेश से अल्पावधि कर्ज	-12,972	35,170	एनए	एनए
4. भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,58,628	1,51,182	21,877	19,823 #
इ. संसाधनों का कुल प्रवाह (अ+आ)	8,82,793	10,77,521	61,475	2,50,210
ज्ञापन मदें				
ऋण (गिल्ट से इतर) स्कीमों के माध्यम से म्यूच्युअल फंडों द्वारा निवल संसाधन संग्रहण	-32,168	96,578	80,149	8,335

\$: 2 जुलाई 2010 तक #: अप्रैल-मई 2010 *: 15 जून 2010 तक

एनए: अनुपलब्ध

IV.18 वृद्धि की सुदृढ़ गति तथा निवेश संबंधी मांग में अधिक तेजी को दर्शाते हुए निजी क्षेत्र को दिए जानेवाले कर्ज में उल्लेखनीय सुधार आया। निजी क्षेत्र की वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लिए बैंकेतर संस्थाओं से संसाधनों का प्रवाह भी बढ़ गया। स्थूल मुद्रा की स्थिति 2010-11 के मौद्रिक नीतिगत वक्तव्य द्वारा परिकल्पित पथ के नीचे बनी रही, जिसका मुख्य कारण जून 2010 के मध्य तक सकल जमाराशियों की वृद्धि में आई गिरावट था। स्थूल मुद्रा और जमाराशियों

दोनों की वृद्धि में टर्नअराउंड आया है, जो दूरसंचार कंपनियों को दिए जानेवाले कर्ज में उछाल तथा आधार दर की ओर स्विचओवर की अवधि के साथ घटित हुआ है। चलनिधि की स्थितियों की तंगी कम होगी परंतु मौद्रिक नीति के सुविचारित सामान्यीकरण से पिछले साल मौजूद चलनिधि की लगातार सुलभ स्थिति की ओर वापसी, हो सकता है, संभव न हो। अतः बैंकों को निजी क्षेत्र और सरकार दोनों से कर्ज की मांग पूरी करने के लिए जमाराशियों का संग्रहण बढ़ाना होगा।